काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी



तीर्थयात्रा २

श्री-श्री १००८ श्री शिवानन्द सरस्वती

स्वामी जी महाराज

अग्रवाल पेपर हाउस

चौक, वाराणसी

कवर सहित) मूल्य—६/-

" मूल्य—९/-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी माहात्म्य
पृष्ठ ३२

श्री गणेशाय नमः

१ श्रुतिस्मृतिविहीना ये शौचाचार विवर्जिता ॥

येषां क्वापि गति नास्ति तेषां वाराणसी गतिः॥

अर्थ→ जो लोग संसारिक भय से डरते हुए हैं, अर्थात जो कर्म पाश से बँधे हुए हैं। और जिन्हें कहीं गति नहीं मिलती उनके लिए काशी गति देने वाली है। जो वेद शास्त्र नहीं जानते अथवा शौचादि नित्य क्रियाओं से रहित हैं, और जिनकी कहीं गति नहीं है। उनके लिए भी काशी नगरी मोक्षदायनी है।

चतुर्था मृतस्तु सालोक्यं साक्षात्प्राप्नोति सत्तमः।

ततः ब्रह्मैकतां याति न परावर्तते पुनः ॥

~~अर्थ→ काशी में मरे हुए प्राणी साक्षात्~~

अर्थ→ इस काशी क्षेत्र में फैले हुए भगवान शिव जी ब्रह्मैकत्व को करने वाले तारक मन्त्र का उपदेश करते हैं और उपदेश प्राप्त करके प्राणी तत्क्षण ही मुक्त हो जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री गणेशाय नमः

श्रुतिस्मृतिविहीना ये शौचाचार विवर्जिता ।।

येषां क्वापि गति नास्ति तेषां वाराणसी गतिः ।।

अर्थ→ जो लोग संसारिक भय से डरते हुए हैं, अर्थात जो कर्म पाश से बँधे हुए है। और जिन्हें कहीं गति नहीं मिलती उनके लिए काशी गति देने वाली है। जो वेद शास्त्र नहीं जानते अथवा शौचादि नित्य क्रियाओं से रहते हैं, और जिनकी कहीं गति नहीं है। उनके लिए भी काशी नगरी मोक्षदायनी है।

चतुर्थो मृतस्तु सालोक्यं साक्षात्प्राप्नोति सत्तमः।

ततः ब्रह्मैकतां याति न परावर्तते पुनः ।।

~~अर्थ→ काशी में मरे हुए प्राणी साक्षात~~

अर्थ→ इस काशी क्षेत्र में फैले हुए भगवान शिव जी ब्रह्मैकत्व को करने वाले तारक मन्त्र का उपदेश करते हैं और उपदेश प्राप्त करके प्राणी तत्क्षण ही मुक्त हो जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री गणेशाय नमः

श्लोक–

यः कश्चिन्मानवो लोके वाराणस्यां त्यजेद्वपुः ।

स चाप्येको भवेन्मुक्तो नान्यथा मुनयो विदुः ॥

अर्थ→ महर्षियों ने कहा है कि जो लोग मनुष्य लोक में जन्म लेकर काशी में शरीर त्याग करते हैं वे मुक्त हो जाते हैं ।

श्लोक–

यूकाश्च दंशाऽपि मत्कुणाश्च मृगादयः कीटपिपीलिकाश्च ।

सरीसृपा वृश्चिकसूकराश्च काशी मृताः शंकरमाप्नुवन्ति ॥

अर्थ→ काशी में मरने वाले प्राणी यूका (जूँ) डांस, खटमल, मृगादि, जील, कीट, चींटी तथा सर्पादि, बिच्छू और सूअर भी काशी में मरकर शिव को प्राप्त होते हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री गणेशाय नमः

श्लोक—

यः कश्चिन्मानवो लोके वाराणस्यां त्यजेद्वपुः।

स चाप्येको भवेन्मुक्तो नान्यथा मुनयो विदुः॥

अर्थ→ महर्षियों ने कहा है कि जो लोग मनुष्य लोक में जन्म लेकर काशी में शरीर त्याग करते हैं वे मुक्त हो जाते हैं।

श्लोक—

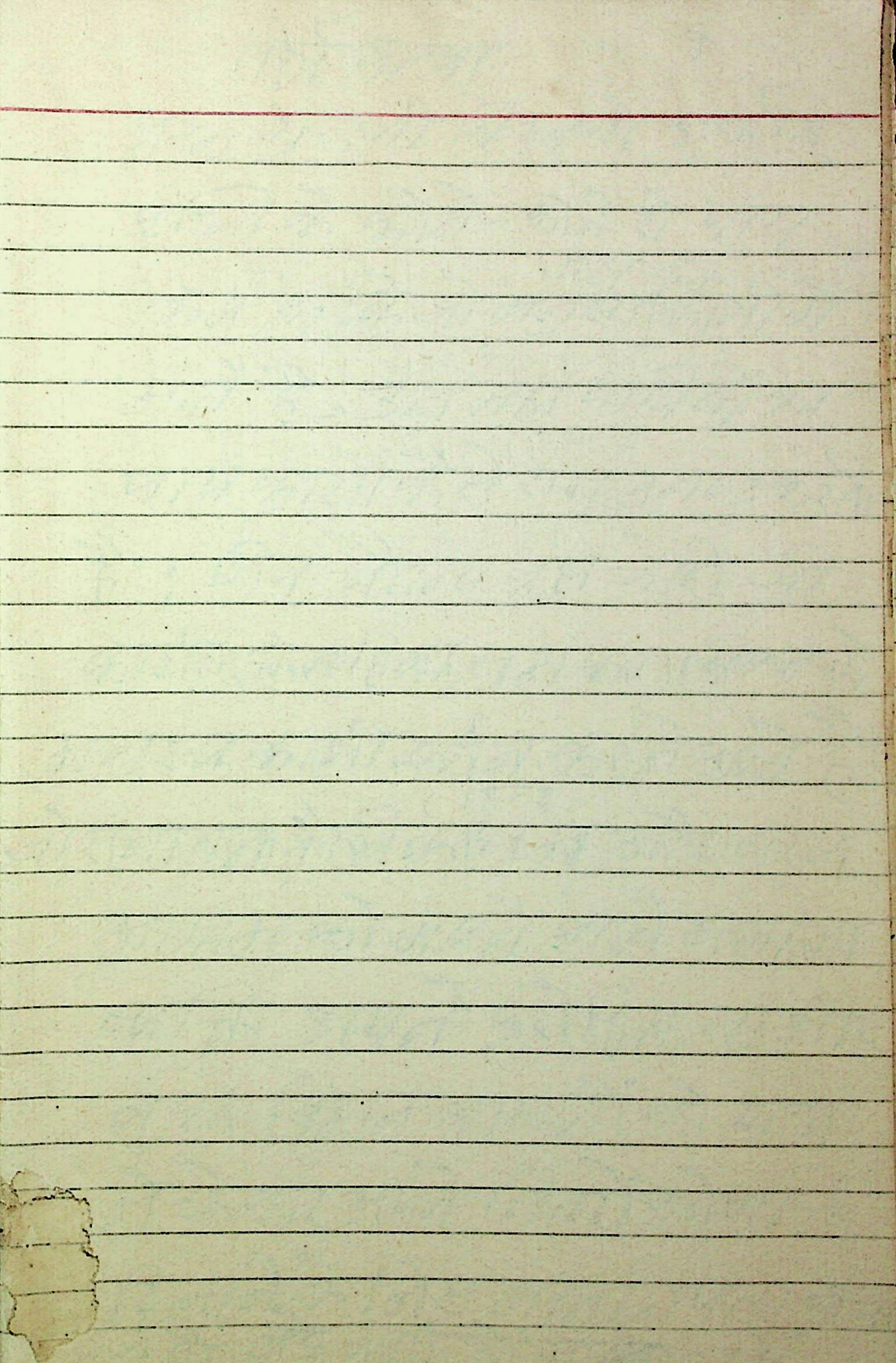
यूकाश्च दंशापि मत्कुणाश्च मृगाश्च कीटपिपीलिकाश्च।

सरीसृपा वृश्चिकसूकराश्च काशी मृताः शंकरमाप्नुवन्ति॥

अर्थ→ काशी में मरने वाले प्राणी यूका (जूँ) डाँस, खटमल, मृगादि, जीव, कीट, चींटी तथा सर्पादि, बिच्छू और सूकर भी काशी में मरकर शिव को प्राप्त होते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रश्न गुरुजी विश्व से आनीत पृथ्वि के कोने-कोने से पाप कर्म करके जो मनुष्य काशी मे आते है, उन महा पापियों का पाप काशी कैसे समूल नष्ट करती है ; शिव चैतन्य ब्रह्मचारी जी

काशी की महिमा सुनकर विश्व के मनुस्य काशी दर्शन करने आते है। सनातन वैदिक हिन्दू धर्म और बरण आश्रम को मानने वाले धर्मात्मा व्यक्ति अपने पुरोहित या बृध्द विद्वान ब्राह्मणों को साथ मे लेकर अपने पितरों को मुक्ति दिलाने के लिए माता-पिता चाचा और बड़े भाई या साधु जनो मे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को — स्नान में)

होकर शास्त्र विधी से संकल्प होकर

के नान्दीश्राद्ध करके अपने नातो

जनों से आज्ञा लेकर अपने कुल

देवता औरों को पूजा करके और नमस्कार करके

तीर्थ यात्रा प्रारम्भ करते हैं

रास्ते में जो तीर्थ मठ मन्दिर पड़ते

हैं, स्नान तर्पण पूजा श्राद्ध

और साधु व ब्राह्मण भोजन कराते हैं

साधु और मन्दिरों का दर्शन और

दान करते हुए

करते हुए पञ्च काशी आते

हैं, तीर्थ पुरोहित के घर में

या धर्मशाला में विश्राम करते हैं

दूसरे दिन काशी के उत्तर वाहिनी

गङ्गा जी में स्नान करके संध्या देव

ऋषि और पितर तर्पण करके

पिण्ड दान करके पूजा श्राद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकर शास्त्र विधी से संकल्प लेकर
नान्दीश्राद्ध करके अपने मान्य
गनों से आज्ञा लेकर अपने कुल
देवताओं को नमस्कार करके
तीर्थ यात्रा प्रारम्भ करते है।
रास्ते में जो तीर्थ मन्दिर पड़ते
है स्नान तर्पण पूजा शान्ति
(साधु एवं ब्राह्मण भोजन कराते है)
दान और मन्दिरों का दर्शन
करते हुए यात्री काशी आते
है, तीर्थ पुरोहित के घर मे
या धर्मशाला विश्राम करते है
दूसरे दिन काशी के उत्तर वाहिनी
गङ्गा जी में स्नान करके संध्या देव
ऋषी और पितर तर्पण करके
पिण्ड दान करके पूजा शो(?)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्र॰ः भगवन् कोऽसौ त्रिलोकी के अधिष्ठान सर्वत्र

आत्मा विज्ञान केवल शुद्ध सुखस्वरूप

उ॰ः सुखस्वरूप अविद्यावृत है कोई

केवल स्वरूप का आँख लगाकर

देखने वाला सर्वत्र देखे

सच्चिदानन्द देहादि से विलक्षण

है नित्य ज्ञान स्वरूप (अन्तर्यामी)

सब कुछ से भिन्न सर्व साक्षी

है जो मुक्त है शुद्ध

सबका वही एक है

है जिसका आत्मा वही सब

विशेष रूप से जो आत्मा को जाने

है वही आत्मा को जाने वाला सुख

वही आत्मा जीव सबका विशेष है

सबका अन्तः देह से रहित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मणों को दान देके दक्षिणा

देते है और साधू महात्मा

एवं ब्राह्मणों को भोजन कराते है

साधू वस्त्र, दक्षिणा देते है ~~देकर आशीर्वाद~~

साधू साधू और ब्राह्मण उन भक्त को

आशीर्वाद देते है। तीसरे

दिन अपने पैसे एवं स्नान दान

में हजारों वर्ष पूर्व के पितर

अकाल मृत्यु से मरे हुए है

या ~~उन~~ अपने कर्मों से भूत, प्रेत पिशाच

बन करके रह रहे है उन सब

को मुक्ति दिलाने के लिये

काशी के पिशाच मोचन में

विद्वान ब्राह्मण और श्राद्ध

की सामग्री साथ में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मणों को दान देके दक्षिणा
देते है और साधु माहात्मा
एवं ब्राह्मणों को भोजन कराते है
वस्त्र, दक्षिणा देकर आशीर्वाद
साधु ब्राह्मण उन भक्त को
आशीर्वाद देते है। तीसरे
दिन अपने पैसे एवं खान दान
मे हजारों वर्ष पूर्व के पितर
अकाल मृत्यु से मरे हुए है,
उन अपने कुल के से भूत प्रेत
पीताश
बन कर के रह रहे है उन सब
को मुक्ति दिलाने के लिये
उसी के पिशाच मोचन में
विद्वान ब्राह्मण और श्राद्ध
की सामाग्री साथ में
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकर पिशाच योनि बन जाते है,
स्नान, तर्पण करके शास्त्र
विधी से पिण्ड दान करते है।
अपने पितरों को पिशाच
योनि से मुक्त कर देते है।
पिण्ड दान करने वाले अपने
वंसज को पितरह आशीर्वाद देते
है — हमारे पुत्र, पौत्र और परपौत्र
~~कोई प्रस्ताव तक~~ सब धर्मात्मा
हो, धनी हो और विद्वान हो तथा
सब निरोग रहे ~~स~~ सब को
सुख शान्ती प्राप्त हो यह आशी
र्वाद देते है। पितरह पिशाच
शरीर को छोड़कर सब पितरह
~~स्वर्ग~~ मुक्त हो जाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकर पिशाच मोचन जाते है स्नान, तर्पण करके शास्त्र विधी से पिण्ड दान करते है अपने पितरों को पिशाच योनि से मुक्त कर देते है। पिण्ड दान करने वाले अपने वंसज को पितरह आशीर्वाद देते है हमारे पुत्र, पौत्र और परपौत्र, कहिं पुस्ता तक सब धर्मात्मा हो, धनी हो और विद्वान हो तथा सब निरोग है स्वस्थ सब को सुख शान्ती प्राप्त हो यह आशीर्वाद देते है। पितरह पिशाच शरीर को छोड़कर सब पितरह स्वर्ग में मुक्त होजाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी के दर्शनस्थल विशेष

निम्न है भारत मन्दिर के प्राकृतिक
भारत माता मन्दिर २
~~भारत~~ ३ दुर्गाजी ४ मानस मन्दिर

५ शंकट मोचन ६ काशी हिन्दू विश्व

विद्यालय बिड़ला मन्दिर और उसका
लाने ... आदि दर्शन करके ८
रामनगर का कि
~~काशी के महाराजा मान्ध्राता सिंह~~
~~सी के विभूति सिंह जी के किला में~~
नाचीन अनादि काल के अस्त्र सहस्त्र रखे
है दर्शन करें।
~~काशी के दर्शन स्थल~~
यदि माघ के
महिना हो तो घोलेश्वर के दर्शन
करने जाना चाहिये। ११
स्टेशन रोड पर
गंगा और गोमती के ~~के~~ संगम में
मार्कण्डेश्वर का मन्दिर है दर्शन
करें १२ काशी के रामेश्वर मन्दिर
में गंगाजल ले कर दर्शन, ~~पूजन~~
पूजन करने जाना चाहिए गंगाजल
मेरामेश्वर को गंगाजल ... महाकी ...
पन ... [illegible]
... होते है ... [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौथे दिन यात्री प्रातः गङ्गास्नान संध्या, तर्पण एवं हवन, पूजा पाठ और यथाशक्ति दान करने के पश्चात साधु, महात्माओं को और ब्राह्मणों को जल पान करा- कर के काशी के तीर्थ, मन्दिर, मठ और में दर्शन और पूजा करने जाते है। सारनाथ दर्शन करने जाते हैं
5 पाँचवे दिन काशी की पञ्चकोशी यात्रा करने जाते है, पञ्चकोशी यात्रा पूर्ण करने के दूसरे दिन प्रातः मठ, मन्दिरों मे (भोज) भण्डारा करते है यथाशक्ति, बस्त्र, दक्षिणा, [illegible] देते है। छठे दिन शिव लिङ्ग की स्थापना एवं मठ मन्दिरो का जीर्णोद्धार करते है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीता रहित वाली [illegible]

[illegible] है [illegible]

नाद और [illegible]

[illegible] और [illegible]

[illegible] है [illegible]

जब की [illegible] है [illegible]

[illegible] और [illegible] है।

[illegible] है [illegible]

[illegible] है [illegible]

[illegible] की [illegible]

[illegible]

[illegible] है [illegible]

[illegible] है। [illegible]

[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौथे दिन यात्री प्रातः गङ्गास्नान
संध्या, तर्पण एवं हवन, पूजा
पाठ और यथा शक्ति दान करने के
पश्चात् साधु, महात्माओं को
तथा ब्राह्मणों को भोजन पान करा-
कर के काशी के तीर्थ, मन्दिर मठ
में दर्शन और पूजा करने जाते है।
पाँचवे दिन काशी की पञ्चक्रोशी
यात्रा करने जाते है, पञ्चक्रोशी
यात्रा पूर्ण करने के दूसरे दिन प्रातः
मठ, मन्दिरों में (भोज) भण्डारा
करते है यथा शक्ति, वस्त्र, दक्षि-
णा होते देते है। छठे दिन शिव
— लिङ्ग की स्थापना एवं मठ
मन्दिरों का जीर्णोद्धार करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को व्यवस्था करते है।

२ दूसरे तीर्थ यात्रियों का वर्णन इस प्रकार है। विश्व से यात्री तीर्थ यात्रा करते हुए काशी मे आते है। गङ्गा स्नान संध्या, तर्पण, पिण्ड-दान करके ब्राह्मणों को और महात्माओं को सन्तर्पण कराते है और यथा शक्ति दक्षिणा देते है। दूसरे दिन गङ्गा स्नान करके मठ-मन्दिर और काशी के दर्शनीय स्थान के दर्शन करने जाते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यात्रा करने वाले काशी के सब पाप भस्म होजाते है।

नोट पिस्वनाथ राष्ट में जो देवता है मन्दिर है वह एक अंस से रहते है काशी में पन्द्र अंससे सभी देवता काशी में निवास करते है। प्रलय के पश्चात पुनः सृष्टी के प्रारम्भ मे काशी से ही विश्व के मन्दिरो मे जाकर एक अंस से सभी देवता तत तत स्थान मे उसी मन्दिर मे जाकर निवास करते है। काशीवास मरण। और काशी मे मरना भी भंगल है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी पृथ्वी से अलग और
तिनो लोको से न्यारी है काशी
में मरे हुए मृतक व्यक्ति के
शव माला आदि सुगन्धित
फूलों से सजाते है। अनेक
प्रकार के बाजा बजाते हुए बाजा
वाहे आगे-आगे चलाते है और
व्यक्ति मृतक सैया पर सोया हुआ
सब को कन्धे पर ढो रहे है।
फूल और वस्त्र आदि से सजा
कर मृतक के उपर फूल, पैसा
एवं धान के लावा बर्षा करते है।
बिशाल जूलूस चलाते है जैसे
बर हजारों बरात लेकर जा
बजाते हुए कन्धे से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बर — कन्या से

बरात लेकर मिलने जाता है
उसी प्रकार काशी में मृतक
क्योंकि बरात लेकर काशी विश्व
नाथ जी से मिलने जाता है।
मृतक के बराती गृहस्थ राम
नाम सत्य है कहते है। और
साधू महात्मा एवं संन्यासी
को पालकिन के ऊपर उसी
प्रकार कंध. धावा के बाधों करते
हुए साधूओं के बराती हर हर
महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ
भो गङ्गे कीर्तन करते हुए
चलते है।)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाना ~~तीसरे तीर्थ यात्री काशी की महिमा~~
~~विश्वराष्ट्र से यात्रा करते हुए~~
~~काशी आते है~~ पंचक्रोशी में
आ जाते है दूसरे दिन प्रात:
तीनो लोकों से न्यारी काशी की
और काशी की उत्तरवाहिनी
गङ्गा जी में नाव या बोट
~~उस~~ में बैठकर आधे गङ्गा जी
से अस्सी संगम से वरुणा संगम
तक काशी की दर्शन करते है
~~अस्र~~ विश्व में काशी की तरहें सी
गङ्गा नदी और नगर कहीं भी
नही है। काशी के अतिरिक्त -
धर्म पाणगा स्नान करके गंगे
के दर्शन करते हैं, ~~धर्म~~ धर्म
करते हुए ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नास्तिक -

मनुष्य भी धार्मिक होजाता है। तीसरे दिन यह यात्री काशी के ~~धार्मिक~~ दर्शनस्थल के दर्शन करने जाते है। बहुत प्रयटक काशी के दृश्य को पुस्तक लिखते है और फोटो करके काशी के दृश्य को होजाते है। काशी मे जो मठ, मन्दिर है और ~~मठ~~ है उन के ~~बाहर~~ से मठ, मन्दिरों के बाहर से सीख का दर्शन करते है, तथा काशी महात्म्य सोयं अपने पुस्तक में लिखते है। और एक विशेष बात यह है। [illegible] तरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के भगवान के भक्त है वह
काशी आने के पश्चात, काशी छोड़
कर जाने नहीं चाहते है।
(गौर ईसाई धर्म मानने वाले
भी काशी आते ही आनन्द का
अनुभव करते है, और ईसाई
यों के प्रमुख ग्रन्थ बाईबल
में शंकर भगवान की स्तुती
और प्रार्थना लीखा है।
इसलिए अभी हिन्दू ओं के
मुख्य देवता शंकर भगवान और महान
ईसाई धर्म को मानने वाले भाई
लोग भी शंकर भगवान को
विशेष मानते हैं। जहाँ रहते है
वहीं से शिवजी की स्तुती और
प्रार्थना करते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुसलमान भाई विश्व से ~~क~~ यात्रा करते हुए काशी आते है काशी की दर्शन करके प्रसन्नता व्यक्त करते है मुसलमानों के मुख्य तीर्थ में कराव्‌ में शंकर भगवान को पूजा, परिक्रमा साष्टाङ्ग दण्डवत स्तुती, प्रार्थना और निरत है हिन्दू आगे होकर करके साष्टाङ्ग ~~दण्ड~~ दण्डवत करते है, मुसलमान पीछे होन करके ~~करके~~ साष्टाङ्ग दण्डवत करते है। आज जो मुसलमान भाई है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है वह सब ~~इन्होंने बर्ष पूर्व~~
~~ढाई हजार वर्ष पूर्व सब हिन्दू थे~~
~~धतरवाह्यदिया करने~~
हिन्दू से सब मुसलमान
बने है, मुसलमानों ~~के आचः~~
~~करण~~ भाई भी शिव जी को
विरोध मानते है। ~~प्रश्न~~
गुरु जी शंकरको मुसलमान
मानते है तो शिव जी के
मन्दिर ~~क्यूं~~ क्यूं तोड़े
है उत्तर मन्दिर अज्ञानी
~~मूर्ख और जिन को पाप~~
तोड़ते है
~~कर्म करते थे~~ है। जो
मक्का मदिना में जो
मुसलमानों का तीर्थ है और
मन्दिर है। वह मन्दिर और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोग वीं चार हजार वर्ष
पूर्व वह महा कालीलिंग
और महाकालेश्वर का स्वयं
प्रगट ~~स्व~~ सोयं ~~भु~~ शिवलिङ्ग है
यह शिवलिङ्ग श्याम रङ्ग के
है। काला कपड़ा ओढ़ाकर
रखते है पूजा मुसलीम ।
पद्धती से करते है। उस
~~महाँ कालेश्वर का~~ मक्का
मदिना का इतिहास लिख
ते हुए ~~मासीम~~ ~~मरलीम भाई~~
~~यों ने लिखा है औ दिव~~
नेपाल के अल्ला खानाम के मुसलीम भाई ने लिखा है
और इस गङ्गा जल लाकर चढावे
गा वह तत्काल मुक्त हो
जावेगा लिखते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैने भारत नेपाल के पैदल
यात्रा मे देखा मुसलमान भाई
पौतो शंकरजी के हजारो
करमन्दिर बनाये हुए है, कहो
ब्राह्मण रखकर पूजा कराते है
जहाँ ब्राह्मण नहि मिलते है
वहाँ मुसलमान भाई स्वयं
पूजा कर रहे है। भारत के अमरनाथ
जी का पुजारी मुसलमान है
और नेपाल के चुडेलागढ़
के शंकर जी के मन्दिर मे मुसलमान पुजारी है। काशी मे
और एक विशेषता है मुस्लीम
और इसाई भाई लोग भी गङ्गा
स्नान करते है मन्दिरो की सैर
रो का दर्शन करते है।
~~काशी मैंभी ईसाई~~

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri